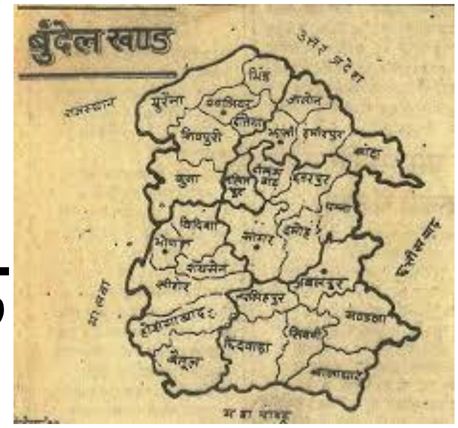
अरविन्द कुमार त्रिपाठी द्वारा पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन





ऐतिहासिक सन्रचना व इतिहास
Etihasik Sanrachana o atihas

Puratan BANDA, Bundelkhand ka Sankshipt Varnan

Arvind Kumar Tripathi

ISBN : 978-93-5906-820-6

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

ऐतिहासिक सन्रचना व इतिहास ⁄ Etihasik Sanrachana o atihas

अध्याय शीर्षक	ऐतिहासिक सन्रचना व इतिहास
सर्वाधिकार	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
आइ एस बी एन/ **ISBN**	**978-93-5906-820-6**
प्रकाशक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक ग्राम – अछरौन्ड, बान्दा – 210 001 उत्तर प्रदेश
मूल्य	निःशुल्क, पुस्तक मित्र को देना
सन्स्करण	प्रथम, 01 अप्रैल 2020
आवरण/मुखपृष्ठ	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
शब्द – संयोजन	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
मुद्रक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
सन्दर्भ/साभार/सौजन्य	अध्याय **Reference** देखे

Chapter Heading	**Etihasik Sanrachana o atihas**
Copyright @	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
ISBN	**978-93-5906-820-6**
Publisher	**Arvind Kumar Tripathi** **Village - Achharaund** **Banda - 210 001** **Uttar Pradesh**
Price	**Free, Circulate to Friends**
Edition	**First, 01 April 2020**
Cover Main	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Word Compositor	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Printer	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Reference/ Gratitude/ courtesy	**Peruse Chapter - REFERENCE**

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

ऐतिहासिक सन्रचना व इतिहास ⁄ Etihasik Sanrachana o atihas

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

ऐतिहासिक सन्रचना व इतिहास

पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड – ऐतिहासिक सन्रचना व इतिहास का संक्षिप्त वर्णन

ऐतिहासिक सन्रचना व इतिहास ⁄ Etihasik Sanrachana o atihas

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

पुरातन बान्दा– बुन्देलखण्ड व ऐतिहासिक सन्रचना इतिहास

इतिहास वर्तमान

यदि हम पितरों को भूल जाए तो यह ऐसा होगा जैसे वृक्ष अपनी जड़ को भूल जाए। कोई भी पत्ती उपर पहुंच तो पहुंच सकती है, लेकिन बिना पूर्वजों के कार्य के अर्थात जड़ के आगे नहीं बढ़ सकती, सूख जाएंगी।

बुन्देलखण्ड राज्य का उद्‌भव व पराभव

आजादी के वक्त 562 रियासतों का विलय किया गया था, तभी संविधान सभा ने 35 रियासतों को मिलाकर बुन्देलखण्ड राज्य को बनाया गया था। बुन्देलखण्ड राज्य 12 मार्च 1948 को अलग राज्य के अस्तित्व में आया। मान्यवर कामता प्रसाद सक्सेना पहले मुख्यमन्त्री बने थे। बुन्देलखण्ड, मात्र 8 वर्ष 7 महीने ही स्वतंत्र राज्य बना रहा जिसकी राजधानी नौगांव जिला छतरपुर में थी। 1953ई0 में न्यायमूर्ति फजलअली की अध्यक्षता में बने प्रथम राज्य पुनर्गठन आयोग ने बुन्देलखण्ड राज्य को बनाए रखने की सिफारिश की थी, आयोग के सदस्य माननीय नाथ कुन्जरु और के एम पणिक्कर भी बुन्देलखण्ड राज्य को बनाए रखना चाहते थे। लेकिन बुन्देलखण्ड राज्य का दुर्भाग्य, नेहरु सरकार के प्रमुख ने सिफारिस को खारिज कर दी।

31 अक्टूबर 1956 / 01 नवम्बर 1956 को नेहरु सरकार ने बुन्देलखण्ड राज्य को समाप्त कर दिया गया और इसके दो हिस्से कर उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में बांट दिया गया। तबसे यह अपनी बदनसीबी पर आंसू बहा रहा है।

इतिहास पुरातन

इतिहास वह विद्या है जिसके द्वारा किसी देश या स्थान के राजनीतिक सान्स्कृतिक एवम् सामाजिक हालात और वहां के राज्य प्रबंध के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। यद्यपि इतिहास एक– एक तरफा विषय है, जो जीत जाता है उसके गान गाने वाले भाट, कई उनके पैसों पर पलने वाले लेखक लोग, वही लिखते हैं जो उनके आका को पसन्द होता है। फिर भी एक दो पुस्तक ऐसी लिख ही दी जाती हैं या पत्र लिख दिए जाते हैं। इनमें उस वक्त के राजाओं के विरुद्ध या नकारात्मक सोच जो चल रही होती है, उसके बारे में लिख दिया जाता है, इसीलिए हिन्दुओं के लिए इतिहास, तारीख की जानकारी और दिलचस्पी, धर्म के साथ–साथ आवश्यक है। [1,2,3]

1900ईस्वी तक की जानकारी

बान्दा

बान्दा जिले का मुख्यालय और तहसील एक ही नाम से है और केन नदी के बिलकुल पास स्थित है। अक्षांश(लैटीट्यूड) 25डिग्री 27मिनट उत्तर और देशान्तर(लोन्गिट्यूड) 80डिग्री 23मिनट पूर्व है। फतेहपुर से नौगांव जाने वाली पक्की सड़क पर बसा हुआ है। यह जनश्रुति है कि इसका नाम, बामदेव ऋषि जो हिन्दू पौराणिक कथा के अनुसार राम के समकालीन है, से लिया गया है।

बुन्देलखण्ड क्षेत्र की पौराणिक स्थिति का ज्ञान, हमें रामायणकालीन घटनाओं में भी मिलता है। श्री राम ने अपने वनवास का प्रथम काल चित्रकूट और उसके आस पास के क्षेत्रों में व्यतीत किया था। श्री राम के वनवास का प्रारम्भिक काल, बुन्देलखण्ड के सुरम्य प्राकृतिक सुषमा के मध्य अत्यन्त सुखपूर्वक व्यतीत हुआ, रामायण में वर्णित है। जब श्री राम चित्रकूट छोड़कर जाने लगे तब निषाद राज ने यहाँ की महत्ता तथा सुन्दरता का वर्णन कर, श्री राम को रोकने का प्रयास किया था। 4,5

प्राचीनकाल में यह क्षेत्र मुख्यतः वनाच्छादित था। देश के तीन प्रमुख प्राचीन वनप्रान्तों नैमिषारण्य, तुन्गारण्य तथा दण्डकारण्य में से यह भूभाग तुन्गारण्य के अन्तर्गत आता था। तुन्गारण्य की सीमायें ओरछा से चित्रकूट तक जाती थीं। वहां से दण्डकारण्य प्रारम्भ हो जाता था। इस वन प्रान्त में अनेक ऋषियों के आश्रम थे जिनमें पराशर, वेदव्यास, कर्दम, च्यवन, जमदग्नि आदि प्रमुख रुप से उल्लेखनीय हैं। उस समय इस क्षेत्र में वनवासी जातियाँ पुलिन्द, शबर, कोल, गौन्ड, निषाद आदि निवास करती थीं। इस क्षेत्र में पाये गये लगभग एक सहस्त्र शैलाश्रयों में पाषाणयुगीन

उपकरणों तथा आयुधों से इन वनवासी जातियों की जीवनशैली और सन्स्कृति के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी मिलती है।

ऐतिहासिक दृष्टि से बुन्देलखण्ड का अस्तित्व सर्वप्रथम, वैदिक काल में चेदि राष्ट्र के रुप में मिलता है। यह अग्नि तथा इन्द्र की पूजा का केन्द्र था। वैवस्वत् मनु की पुत्री का नाम इला था, जिसका विवाह सोम से हुआ था। इसी से ऐल अर्थात् चन्द्रवश की स्थापना हुई जिसके आदि पुरूष पुरुरवा था। पुरूरवा के अधीन ऐल सामाज्य का विस्तार हुआ। अपने साम्राज्य का विस्तार करते हुये उसने वर्तमान बुन्देलखण्ड के क्षेत्र पर भी अधिकार कर लिया। पुरूरवा की चौथी पीढ़ी में हुआ ययाति, इस क्षेत्र का शासक बना। उसने यह क्षेत्र अपने पुत्र यदु को दिया जिसको चर्मण्वती(चम्बल), वेत्रवती(बेतवा) तथा शुक्तिमती(केन) की धाराओं से सिनचित प्रदेश प्राप्त हुआ। इन्ही यदु से यादव वंश की स्थापना हुई। इसी यदुवंशी परम्परा के राजा कौशिक ने चर्मण्वती(चम्बल) ओर शुक्तिमती(केन) के मध्य के प्रदेश अर्थात् बुन्देलखण्ड में राज्य स्थापित किया, जो चेदि जनपद कहलाया। इसी काल मे विदर्भ के एक प्रसिद्ध राजा भीमरथ की सुन्दरी कन्या दमयन्ती से नलपुर के राजा नल ने विवाह किया था। अनुश्रुति के अनुसार नल ने ही नलपुर नगर बसाया था, जो आधुनिक शिवपुरी जिले में नरवर के रूप में विद्यमान है

6



7

इतिहास– अन्य जानकारी

यह क्षेत्र, जो वर्तमान में बान्दा जिले के रूप में जाना जाता है, दूरस्थ पुरातनता में वापस जाने वाली एक समृद्ध ऐतिहासिक परम्परा का दावा कर सकता है। यहां पाषाण काल और नवपाषाण काल के पाए गए पत्थर की मूर्तियां और अन्य अवशेष, यह साबित करते हैं कि मानव सभ्यता उन शुरुआती काल में उसी तरह से शुरू हुई, जैसे देश के बाकी हिस्सों में।

प्रागैतिहासिक काल में आदिवासी या आदिम लोग इस क्षेत्र में निवास करते थे। इस क्षेत्र से जुड़े सबसे आरम्भिक आर्य लोग ऋग्वेद में उल्लिखित थे। माना जाता है कि इस क्षेत्र में एक समृद्ध ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है। इस क्षेत्र के सबसे पहले ज्ञात पारम्परिक शासक ययाति थे जिनके सबसे बड़े पुत्र यदु को यह क्षेत्र विरासत में मिला था, बाद में उनकी सन्तानों द्वारा इसका नाम चेदि–देश रखा गया। कालिन्जर के नाम से जानी जाने वाली एक पहाड़ी है जिसे पवित्र माना जाता है और वेदों में उल्लेख किया गया है कि तपस्या–स्थान या स्थानों में से एक को भक्ति की प्रथाओं के अनुकूल माना जाता है। बामदेव, वह महान ऋषि, जिनसे इस जिले का नाम बाम्दा (बाद में बान्दा) पड़ा, इस क्षेत्र में रहते थे। यह भी माना जाता है कि भगवान राम ने अपने निर्वासन के 14 में से 12 साल चित्रकूट में बिताए हैं, जो कुछ साल पहले तक बान्दा का हिस्सा था। कहा जाता है कि प्रसिद्ध कालिन्जर –पहाड़ी (कलन्जराद्री) का नाम स्वयम् भगवान शिव से लिया गया है, जो कालिन्जर के मुख्य देवता हैं जिन्हें आज भी नीलकन्ठ कहा जाता है। इस जगह का हिन्दू पवित्र पुस्तकों में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है– रामायण, महाभारत और पुराणों में भी।

ऐसा लगता है कि यह क्षेत्र चौथी शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास मगध के नंद साम्राज्य में मिला दिया गया था, बाद में इसने 236 ईसा पूर्व में अशोक की मृत्यु तक मौर्य साम्राज्य के तहत क्षेत्र का गठन किया। पुष्यमित्र शुन्ग ने इस क्षेत्र पर कब्जा कर लिया जो लगभग 100 वर्षो तक शुन्गों के अधीन रहा और उसके बाद कुछ ही समय के लिए कण्व ने भी। कुषाणों ने भी भूमि के इस मार्ग पर शासन किया। नागाओं ने तीसरी और चौथी शताब्दियों के दौरान कभी–कभी चौथी शताब्दी ईस्वी के मध्य में गुप्तों के बाद इस मार्ग पर शासन किया। इस क्षेत्र का नाम बाद में जेजाकभुक्ति या जाझोटी रखा गया। केवल कुछ समय के लिए यह क्षेत्र हूणों और फिर पांडुवमसी–राजा उदयन के

अधीन हो गया। जैसा कि प्रसिद्ध राजा हर्षवर्धन (606–647ईस्वी) ने उत्तर भारत पर अपना आधिपत्य स्थापित किया, यह क्षेत्र इस प्रभुत्व का एक हिस्सा था।

एक बहुत प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसान्ग (641–642 ईस्वी) ने इस क्षेत्र का उल्लेख चिह–ची–टू और खजुराहो की राजधानी के रूप में किया है। इस मार्ग पर हर्षवर्धन, कलचुरियों और प्रतिहारों के शासन के बाद, प्रसिद्ध चन्देलों की एक लम्बी राजशाही का पालन किया गया था। दूसरे महत्वपूर्ण चन्देला राजा के दौरान पूरे बुन्देलखण्ड और आसपास के क्षेत्र को कवर करने के लिए अपने क्षेत्र का विस्तार किया गया और पहले चन्देला कलन्जारीधिपति को सम्मानित किया गया।

11वीं शताब्दी के पहले भाग में गज़नी के महमूद ने कई बार कालिन्जर तक मार्च किया, लेकिन विरोध किया गया और वापस जाने के लिए मजबूर किया गया। 1182ईस्वी के दौरान, दिल्ली और अजमेर के चौहान राजा प्रियव्रजा के नाम से प्रसिद्ध चन्देला– राजा परमर्दिदेव को पराजित किया गया था, हालाँकि वे अपने स्वयम् के कारणों से इस पथ को बनाए नहीं रख सके और परमर्दिदेव ने जल्द ही अपना स्थान पुनः प्राप्त कर लिया। 1202ईस्वी में कुतुब–उद–दीन ऐबक (मुहम्मद घूरी के जनरल) ने किले पर कब्जा कर लिया था, चन्देलों ने अपने क्षेत्र को पुनः प्राप्त किया और 13वीं शताब्दी ईस्वी के दौरान इस पर शासन किया।

लोदी–सुल्तानों ने भी थोड़ी देर के लिए कालिन्जर पर कब्जा कर लिया, लेकिन फिर से हिन्दू राजा के कब्जे में लौट आए। मुगल राजकुमार हुमायूँ मिज़ा ने इसे पुनः प्राप्त करने का प्रयास किया लेकिन 1530ईस्वी में उसके पिता बाबर की मृत्यु ने उसे इस कदम को छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया। पंद्रह साल बाद शेरशाह सूरी ने कालिन्जर (1545ईस्वी) के किले को घेर लिया, लेकिन इसके कब्जे से ठीक पहले जन्गी कार्यवाही के दौरान मारा गया। अन्तिम रूप से उनके बेटे जलाल खान को इस्लाम शाह की उपाधि के तहत कालिन्जर किले में शाही सिन्हासन पर बैठाया गया था। चन्देला–राजा और उसके सत्तर सैनिकों को जल्द ही मार दिया गया और इस तरह कालिन्जर पर लम्बे चन्देला–शासन का अन्त हो गया।

बाद में बघेला–राजा, राम चन्द्र ने कालिन्जर का किला खरीद लिया, लेकिन बाद में अकबर के प्रतिनिधि मजनूं खान कुक्साल द्वारा कब्जा कर लिया गया और कालिन्जर किला मुगल प्रभुत्व का एक अभिन्न हिस्सा बन गया। तत्पश्चात उनके जीवन के दौरान राजा बीरबल ने कालिन्जर को अपना जागीर बना लिया। मुगल शासन के दौरान बान्दा जिले के अन्तर्गत अधिकान्श क्षेत्र कालिन्जर –सिरकर के अन्तर्गत आता था। दस महल थे, जिनमें से कालिन्जर –सिरकर में छह थे जैसे कि औगासी, सिहौंद, सिमौनी, शादीपुर, रसिन और कालिन्जर बान्दा के वर्तमान जिले का हिस्सा हैं।

इस क्षेत्र के बान्दा इतिहास में कोई उल्लेख नहीं मिलता है। अकबर की मृत्यु के बाद यानि स्थानीय शासकों के अधीन यह क्षेत्र फिर से स्वतन्त्र हो गया। जहाँगीर के समय में बुन्देलों ने अपनी स्थिति मजबूत की और इस क्षेत्र का गढ़ ओरछा में स्थानान्तरित हो गया।

चम्पत राज के बहादुर नेतृत्व में बुन्देलों ने महोबा सहित हमीरपुर के दक्षिणी हिस्से पर कब्जा कर लिया। राजा चम्पत राज के पुत्र रतन शाह ने भी शाही सेना के खिलाफ लड़ाई लड़ी। उनके दूसरे बेटे, छत्रसाल ने बुन्देला–कारण को उठाया, अपने सभी कम शक्तिशाली बुन्देला प्रमुखों के बैनर तले एकजुट होकर, पहले से ही घट रही मुगल सत्ता के लिए खतरा पैदा कर दिया। छत्रसाल ने पन्ना (1691ईस्वी) में अपनी राजधानी बनाई और यमुना के दक्षिण में लगभग पूरे इलाके को जीत लिया, जो आज बुन्देलखण्ड के नाम से जाना जाता है।

बान्दा के सबसे पुराने बाशिंदे जो यहां आदिकाल से बसे हुए थे कोल और भील माने गए हैं जिन्होने पहाड़ की तलहटी के नीचे एक छोटा गांव बसाया हुआ था जो खुटला के नाम से जाना जाता था। बान्दा में खुटला के नाम से एक मोहल्ला बसा हुआ है और आज भी विद्यमान है। उनके धार्मिक नेता व दिग्दर्शन करने वाले नेता एक दुबे ब्राह्मण थे। वे शिकारी भ्रमण में भी उनके नेता थे।

कोल और भील (कथित लुटेरों) का समूह दुबे ब्राह्मण को मान्यता देता था और वह उनको अपना मुखिया मानते थे। बृजलाल और बृजराज जो मोहर(**Mohur**) राजपूत थे और मोहर(**Mohur**) राजपूतों के मुखिया थे, से लड़ाई में हार गए।(हारा हुआ समूह कथित लुटेरे होते है।) 8,9

इन तारीखों के बाद से और पृथ्वीराज चौहान के आक्रमण के समय तक, मोहर राजपूतों का गांव में समय 1200एडी से आंका गया। 10

बृजलाल ने बान्दा छोड़ते वक्त बान्दा को अपने दो भाई, भवानी और लरंका को सौंपकर चले गए और जिस जगह को उन्होंने जीता था उनके नाम पर भवानीपुरवा मोहल्ला और लरंका पुरवा मोहल्ला बन गया था। भवानी पुरवा मोहल्ला और लड़ाका पुरवा(लरंका पुरवा) मोहल्ला के नाम से आज भी विद्यमान हैं और शहर का एक हिस्सा है।

मुगल सम्राट के समय तक बान्दा एक बहुत छोटा सा गांव था और 18वीं शताब्दी तक गांव ही रहा। 18वीं शताब्दी के शुरुआत में वित्तीय अभिलेखों के अनुसार, वित्तीय अभिलेखों में परगना लिखा गया और इसके बाद यह एक परगना बना। 18वीं शताब्दी के मध्य में राजा गुमान सिन्ह का मुख्यालय बना। राजा गुमान सिन्ह छत्रसाल के पोते(**Grandson**) थे और यही बान्दा के पहले और अन्तिम राजा थे।

उस वक्त जनसन्ख्या शायद बहुत कम थी और कस्बा कहलाने लायक भी नहीं थी एक धंसी हुई जमीन में बने एक बड़े प्राकृतिक तालाब के चारों तरफ, उसके किनारे पर कुछ एक छोटे गांव बसे या घर बने हुए थे और उस जगह गहरी जगह का गहरा पानी जो अब काफी अन्श तक भर चुका है और कॉलविनगंज (**Colvinganj**) मोहल्ले के द्वारा कब्जा किया जा चुका है। यह बड़ा तालाब ''राजा के तालाब'' के नाम से जाना जाता है क्योंकि राजा गुमान सिन्ह ने इसकी मरम्मत कराई थी। यह खिन्नी नाका रोड के उत्तर तक उसको बना दिया था जो उसके पुराने तटबन्ध की रेखा थी। तालाब का पश्चिम किनारा जो बिल्कुल पास की एक पहाड़ी के तलहट तक फैला है और उत्तरी भाग को नवाब का इमामबाड़ा जाना जाता है। जो आज(2022ईस्वी में) भी देखा व जाना जाता है।

शाही आदेश पर इलाहाबाद के गवर्नर के रूप में मुहम्मद खान बन्गश ने बुन्देलखण्ड को फिर से हासिल करने की कोशिश की, लेकिन कुछ महत्वपूर्ण कारणों से इस कदम को छोड़ना पड़ा। उसने 1728ईस्वी में एक और प्रयास किया लेकिन उसे वापस जाना पड़ा और उसके खिलाफ मराठा–बुन्देला सान्ठ–गान्ठ के कारण उसे भागने पर मजबूर होना पड़ा। बन्गश इतना बदनाम था कि उसे गवर्नर के पद से हटा दिया गया। मराठा प्रमुख पेशवा बाजी राव ने छत्रसाल को अपने पिता के रूप में माना, जिन्होंने अपने अन्तिम दिनों में, अपने हिस्से को तीन भागों में विभाजित किया और पेशवा बाजी राव को उनके तीसरे पुत्र के रूप में एक हिस्सा दिया, बाद में बुन्देलखण्ड में मराठा की उपस्थिति इस घटना के कारण हुई। छत्रसाल के दूसरे पुत्र, जन्गलराज को बान्दा के चारों ओर के किले और प्रभुत्व प्राप्त हुए जिन्हें राजधानी बनाया गया और केन नदी के पश्चिमी तट पर भूरागढ़ का किला 1746ईस्वी के दौरान कुछ समय के लिए बनाया गया लगता है।

1762 में अवध नवाब ने बुन्देलखण्ड को जीतने की कोशिश की, लेकिन बुन्देलों की एकजुट ताकतों ने तिंदवारी क्षेत्र के निकट नवाब की सेना का लगभग सफाया कर दिया। सेनानायक/कमांडर करामत खान और राजा हिम्मत बहादुर को पलायन करने के लिए यमुना में कूदना पड़ा। धीरे–धीरे 18वीं शताब्दी के अन्त तक बुन्देला–शक्ति लगभग अपन्ग हो गई, क्योंकि उत्तराधिकारी बुन्देला प्रमुखों में झगड़े हुए, जिसके परिणामस्वरूप वही हुआ।

1791ईस्वी में नोनी अर्जुन सिन्ह की देखरेख में बान्दा के राजा बुन्देला ने, आक्रमणकारियों बहादुर का मुकाबला किया, जो पेशवा बाजी राव और उनकी मुस्लिम रखैल ~~मस्ती~~ मस्तानी और उनके दोस्त हिम्मत बहादुर गोसाई से सम्बन्धित थे। नोनी के बाद अर्जुन सिन्ह की जान चली गई, बान्दा अली बहादुर के अधीन आ गया, जिसने खुद को बान्दा का नवाब घोषित किया। बाद में 1802ईस्वी में कालिन्जर किले पर कब्जा करने की कोशिश करते हुए, अली बहादुर ने अपनी जान गंवा दी। यह मृतक अली बहादुर के पुत्र शमशेर बहादुर की नवाबी के दौरान था, जिसे बान्दा बाडे में अपने निवास का मुख्य शहर बनाया था। बुन्देल लोग इस स्थिति से कभी सन्तुष्ट नहीं थे और उन्होंने बान्दा के नवाब के अन्त तक बान्दा के नवाब का विरोध किया। 1803ईस्वी में बसीन की सन्धि ने ब्रिटिश शासन के तहत कानूनी तौर पर बान्दा लाया, हालांकि बान्दा के नवाबों ने उनके प्रवेश का विरोध किया।

अनूप गिरी– उर्फ हिम्मत बहादुर उर्फ महाराजा बहादुर, –सनाढ्य ब्राह्मण पुत्र, –राजा इंद्र गिरी का शिष्य, नवाबों के एक समय के दोस्त ने उन्हें धोखा दिया और अन्ग्रेजों को बर्खास्त कर दिया और नवाब शमशेर बहादुर को पराजित किया गया और 1804ईस्वी में ब्रिटिश शासन की सम्प्रभुता को स्वीकार करना पड़ा।

1812ईस्वी में कालिन्जर ब्रिटिश आधिपत्य में आ गया। कालिन्जर के किलेदार को उनके परिवार और वार्ताकार के लिए अलग–अलग जागीरों को उपहार में दिया गया था और मार्च 1819ईस्वी में बान्दा शहर को नव

निर्मित दक्षिणी बुन्देलखण्ड जिले का मुख्यालय बनाया गया था। नवाब अली बहादुर द्वितीय ने 1857ईस्वी के विद्रोह के दौरान अन्ग्रेजों के खिलाफ स्वतन्त्रता–सन्ग्राम में सक्रिय रूप से भाग लिया। तब बान्दा जिले के निवासियों ने पूर्वी जिलों से आने वाले स्वतन्त्रता सेनानियों से प्रेरित होकर ब्रिटिश शासन के खिलाफ बड़ी सन्ख्या में हथियार उठाए। 14 जून को ब्रिटिश अधिकारियों ने बान्दा छोड़ दिया और नवाब ने खुद को स्वतन्त्र घोषित कर दिया। बान्दा के नवाब ने न केवल बान्दा में अपने शासन का आयोजन किया, बल्कि बुन्देलखण्ड में कहीं/कई और क्रांतिकारी प्रयासों में सहायता की। वह क्रांतिकारियों को ब्रिटिश कर्मियों की हत्याओं में लिप्त न होने के लिए राजी करने में सक्षम था। लेकिन स्वतन्त्रता केवल एक साल तक चली जब जनरल व्हिटलॉक के तहत ब्रिटिश सैनिकों ने गोएरा मुगली गांव में नवाब की सेना को हराने के बाद बान्दा में मार्च किया। 800 स्वतन्त्रता सेनानियों को मार दिया गया और भूरागढ़ किले को नष्ट कर दिया गया। नवाब अली बहादुर द्वितीय को बान्दा छोड़ने के लिए कहा गया था, जिसके लिए प्रति वर्ष रु0 36,000/– की पेंशन दी गई थी।

बीसवीं सदी की शुरुआत के वर्षो से बाद के दौरान तक लोगों का एक बहुत मजबूत दमन था जब 1905ईस्वी के विभाजन विरोधी आंदोलन में बड़ी सन्ख्या में युवाओं की भागीदारी का सन्दर्भ था और विदेशी शासन के खिलाफ जागरूकता को उजागर करता था। स्वदेशी आन्दोलन शुरू हुआ और विदेशी लेखों का बहिष्कार करने और स्वदेशी वस्तुओं से निपटने की शपथ केवल लोगों ने ली। दयानंद वैदिक अनाथालय का उद्घाटन लाला लाजपत राय ने वर्ष 1908ईस्वी में बान्दा में किया था।

1920ईस्वी का असहयोग आन्दोलन, जिले में आग की तरह फैल गया। लोगों को सरकार छोड़ने के लिए प्रेरित किया गया था। सेवाओं, अदालतों का बहिष्कार, और बच्चों को सरकारी स्कूलों में नहीं जाने की सलाह दी गई। 1920ईस्वी में एक राष्ट्रवादी स्कूल की स्थापना की गई और सत्याग्रही प्रकाशित होने लगी जिसने जनमानस को क्रांति की ओर अग्रसर किया। नवम्बर 1929ईस्वी में, महात्मा गान्धी ने बान्दा का दौरा किया। 1930ईस्वी में देश के बाकी हिस्सों के साथ बान्दा में सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू किया गया था। नमक सत्याग्रह की शुरुआत यहां सविनय अवज्ञा आंदोलन के बाद हुई थी जिसमें सभी क्षेत्रों के लोगों ने बहुत सक्रिय रूप से भाग लिया था। इससे व्यापक जागरण हुआ और महिलाओं सहित बड़ी सन्ख्या में लोग आंदोलन में शामिल हुए। इस दौरान कानून और व्यवस्था को तोड़ने के लिए 100 से अधिक लोगों को गिरफ्तार किया गया। जाने–माने क्रान्तिकारी चन्द्र शेखर आज़ाद ने भी उसी दौरान बान्दा का दौरा किया था, जिसमें लोगों को उनकी गतिविधियों के लिए वित्त, हथियारों और गोला–बारूद के माध्यम से सहायता प्रदान की गई थी। सेना में एंटी रिक्रूटमेंट ने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान भी अभियान चलाया और हजारों ने युद्ध–कोष के खिलाफ सत्याग्रह में भाग लिया। जिला अधिकारियों ने कम से कम 59 व्यक्तियों को दोषी ठहराया।

8 अगस्त, 1942ईस्वी को भारत छोड़ो आंदोलन चरमपंथी गतिविधियों के साथ शुरू किया गया था, जिसके परिणामस्वरूप कम से कम 84 लोग अपने आचरण के लिए गए थे। 1947ईस्वी में स्वतन्त्रता की पूर्व सन्ध्या तक प्रतिरोध जारी रहा। 15 अगस्त, 1947ईस्वी को स्वतन्त्रता का स्वागत और आनन्द हुआ। एक ही समय में पाकिस्तान के कई विस्थापितों को लाने के दौरान विभाजन की परम्परा और घावों को भी बड़ी बेचैनी के साथ महसूस किया गया था। 30 जनवरी 1948ईस्वी को महात्मा गांधी की हत्या भी घटना थी जिसका सभी लोग शोक मनाते थे। 26वी जनवरी 1950ईस्वी को अपने सम्विधान को अपनाने के साथ ही सम्प्रभु भारतीय गणराज्य की घोषणा को यहां उत्साह के साथ मनाया गया। 1977ईस्वी में आपातकाल की घोषणा के दौरान लगभग इसी तरह के प्रतिरोध को जिले भर के जागरूक लोगों द्वारा देखा गया था, जिन्हें लगभग 19 महीने की सजा हुई और जेल गए।

1998ईस्वी में, एक नया जिला, चित्रकूट का गठन दो तहसीलों जैसे करवी और मऊ के साथ किया गया था। जिला बाँदा पाँच तहसीलों जैसे बबेरू, बान्दा, अतर्रा, पेलानी और नरैनी के साथ रहा। एक नयी कमिश्नरी चित्रकूट धाम, बान्दा में मुख्यालय के साथ चार जिलों बान्दा, हमीरपुर, महोबा और चित्रकूट का भी गठन किया गया था।

बान्दा भारत के उत्तर प्रदेश में बान्दा में केंद्रित एक रियासत थी। 1857ईस्वी के भारतीय विद्रोह में भाग लेने के कारण इसे विस्थापित कर दिया गया था। बान्दा राज्य द्वारा नियन्त्रित पूर्व क्षेत्र में 1881ईस्वी में 6,98,608 लोगों की आबादी थी।

बान्दा में अली बहादुर प्रथम थे। वह पेशवा बाजीराव के पोते और शमशेर बहादुर के पुत्र थे। बहादुर अपने लिए एक स्वतन्त्र रियासत बनाने में कामयाब रहे। हालांकि, 1857ईस्वी के असफल भारतीय विद्रोह में भाग लेने के बाद अल्पकालिक राज्य का अस्तित्व समाप्त हो गया। इसके अन्तिम शासक अली बहादुर द्वितीय को पदच्युत कर दिया गया

था, और राज्य को ब्रिटिश राज द्वारा कब्जा कर लिया गया था और उन्होंने इस क्षेत्र पर शासन करने के लिए अवध से एक तालुकदार नियुक्त किया था।

शासकों की सूचीः ईस्वी में

अली बहादुर प्रथम	(1790—1802)
जुल्फिकार अली	(1802)
शमशेर बहादुर द्वितीय	(1802—1825)
जुल्फिकार अली	(1823—1850)
अली बहादुर द्वितीय	(1850—1858)

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

नामकरण

प्रायः किसी भी प्रदेश के नामकरण के निर्धारण में वहाँ के ऐतिहासिक तथ्य सहायक होते हैं। ये तथ्य वहाँ उस क्षेत्र के निवासी तथा शासक वर्ग पर निर्भर करते हैं। इसके अतिरिक्त वहाँ की प्राकृतिक दशा भी नामकरण में सहायक होती है। बुन्देलखण्ड भी इससे अछूता नहीं है। कहा जाता है कि बुन्देलखण्ड का नाम छः सौ वर्षो से अधिक पुराना नहीं है। **11**

प्राचीनकाल मे पुराणों में इस क्षेत्र का नाम मध्य देश भी पाया गया। आदिवासी गौण्ड जाति की प्रधानता के कारण यह क्षेत्र गोंडवाना नाम से सम्बोधित हुआ। कालान्तर में इस प्रदेश को आटव्य देश नाम से भी प्रसिद्धि प्राप्त हुई। अन्ग्रेजों के शासनकाल में इस भू–भाग को सेंट्रल इण्डिया नाम से पुकारा गया। वनों की प्रचुरता के कारण यह क्षेत्र अरण्यक या वन्य देश भी कहलाया। उत्तर में यमुना नदी एवम् दक्षिण में नर्मदा नदी के बीच के क्षेत्र भिन्न–भिन्न कालों में अनेक नामों से उच्चारित किए गये।

महाभारत काल में यह प्रदेश चेदि देश नाम से सम्बोधित हुआ। इस क्षेत्र का राजा शिशुपाल चेदि–चन्देरी का राजा था, शुक्तिमती/केन नदी तक उसकी सीमाएं थी। बुन्देलखण्ड का प्राचीन नाम दशार्ण रहा है। सम्भवतः इस भू–भाग से दस नदियाँ प्रवाहित होती थी। इस प्रदेश के राजा हिरण्यवर्मा की पुत्री पान्चाल देश के राजा शिखण्डी को ब्याही थी। इसी वंश के शासक सुधरमा और भीमसेन के बीच युद्ध हुआ। इनकी राजधानी विदिशा थी।

12

धसान नदी के निकटवर्ती भू–भाग को दशार्ण नाम से पुकारा जाता था। दशार्ण के दक्षिण में पुलिन्द राज्य था। इस वन्श के शासक की पुत्री चेदिवंश के शासक भीम को ब्याही थी। जिसकी पुत्री दमयन्ती थी। नर्मदा नदी के तट तक फैला यह राजमार्ग भरहुत से होता हुआ कौशाम्बी तक जाता था। कालान्तर में चेदि देश की सीमाएं मगध वन्शीय शासकों के अधीन हो गई जो सोन नदी तक विस्तृत थी।

चन्देलवंशीय राजाओं में राजा जय शक्ति या जेज्जाक अत्यन्त प्रतापी राजा हुए तथा इसी नाम से इस क्षेत्र को पुकारते थे। चन्देलों के उत्थान–पतन काल में देश जेजाकभुक्ति नाम से ही विख्यात था। पृथ्वीराज चौहान के मदनपुर शिलालेख से प्रकट होता है कि बारहवीं सदी के अन्त तक यह प्रदेश जेजाकभुक्ति के नाम से प्रसिद्ध था।

छठी शती ईस्वी में यमुना और नर्मदा नदी के बीच का क्षेत्र जेजाहुति/जुझौतिया कहा जाता था क्योंकि अधिकान्श मात्रा में ~~जुझौतिया ब्राह्मण~~ और अहीर यहाँ के निवासी थे। इस भू–भाग का नाम युद्ध देश या जुझौतिया यहाँ की लोकप्रिय, युद्ध प्रिय प्रवृत्ति के कारण हुआ। जुझौति बुन्देलखण्ड का प्रथम नाम है। स्कन्ध पुराण में इसका निर्देश राज्य के रूप में मिलता है। कान्तिपुर चेदि मालवा इस राज्य की सीमाएँ थी। इस राज्य में 42,000 गांव शमिल थे।

जुझौति शब्द का उल्लेख अबूरिहॉन ने बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। इनके अनुसार– इस देश की राजधानी खजुराहो थी, जो कन्नौज से उ0 परगना अथवा 60 मील दक्षिण–पूर्व है, किन्तु कन्नौज से खजुराहो की वास्तविक दूरी 180 मील अथवा 60 परगना है(1 परगना = 3 मील)। इसके अतिरिक्त इस नगर में इब्नबतूता भी आया था और इसे खजूर के नाम से पुकारा, इसके चारों तरफ मन्दिर काफी तादाद में बने हुए थे। अतः इससे ज्ञात होता है कि जुझौति ही आधुनिक बुन्देलखण्ड है। जुझौति ब्राह्मणों की बाहुल्यता के कारण यह जुझौतिया या यजुर्होत्र भी कहा जाता था। कुछ समय के लिए जेजा या जय शक्ति नरेश के नाम पर यह जेजा भुक्ति अथवा जेजाकभुक्ति नाम से पुकारा गया,

इसके पश्चात बुन्देलखण्ड के अनेक नाम परिवर्तित हुए।

नामकरण

डा० वगीश शास्त्री जी की पुस्तक बुन्देलखण्ड की प्राचीनता में "इसकी व्युत्पत्ति बूँद (बृंद) लः = बुन्देला+खण्ड = बुन्देलखण्ड बतलायी जाती है। इसके पहले यह देश जिझौति के रुप में प्रख्यात था। कुछ इतिहासकार इस प्रदेश का सम्बन्ध विन्ध्य से जोड़ते हैं। कुछ लोग बुन्देली को ब्रजवुलि से विकसित मानते हैं। शास्त्री जी इस प्रदेश को पुलिन्द जाति का प्रदेश मानते हैं। अतः पुलिन्द अपभ्रन्श बोलिन्द और बुन्देल मानते हैं।

13

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

इस प्रदेश का नाम बुन्देलखण्ड है लेकिन इसके नामकरण के सम्बन्ध में मतभेद अवश्य ही जान पड़ता है क्योंकि राजा वीरसिन्ह देव एवम् छत्र प्रकाश चरित के आधार पर यह कथा निम्नवत् है कि

एक राजा ने विन्ध्यवासिनी देवी को प्रसन्न करने के लिए काफी समय तक घोर तपस्या की। देवी माँ फिर तब भी प्रसन्न न हुयी तो उस राजा ने निराश होकर माँ के चरणों में अपना जीवन त्यागने का विचार किया और अपनी तलवार निकालकर अपनी गर्दन पर प्रहार किया, उसी क्षण देवी माँ प्रकट हो गयी। देवी माँ ने कहा कि उसकी खून की बून्दों से पैदा हुआ उसका पुत्र एक शक्तिशाली विजेता होगा तथा बुन्देलवन्श की नींव रखेगा।

''इतिहास बुन्देलखण्ड'' में महाराज सिन्ह ने इसका वर्णन किया है। उसमें देवी विन्ध्यवासिनी देवी के मन्दिर में खून की बून्दों से उत्पन्न किसी राजकुमार का वर्णन नहीं है। बुन्देलों की पैदाईश की एक अलग ही कथा का वर्णन ''हकीकत–उल–आलिमा'' में मिलता है और इसका समर्थन इलियट तथा स्मिथ ने भी किया है। इस कथा के अनुसार गृहखार वंश के राजा हरदेव एक सेविका (बान्दी) के साथ खेरागढ़ से आकर ओरछा के निकट बस गये। उसने वहाँ के खन्गार नरेश का वध कर दिया और वह बेतवा तथा धसान के बीच के देश का स्वामी बन गया।

कहा जाता है कि राजा हरदेव के उत्तराधिकारी जो इस सेविका(बान्दी) से हुए, वे बुन्देला कहलाये और यह प्रदेश बुन्देलखण्ड कहलाया। इस प्रदेश की भाषा बुन्देली कहलायी।

मुगल शासन (अकबर से औरंगजेब तक) में बुन्देलखण्ड का क्षेत्र आगरा, इलाहाबाद तथा मालवा प्रान्त के सूबेदारों द्वारा नियन्त्रित था। केन तथा धसान नदी द्वारा विभाजित बुन्देलखण्ड पूर्वी और पश्चिमी बुन्देलखण्ड राज्य के नाम से सम्बोधित किया गया था। यहाँ वन और पहाड़ अधिक थे जिन्हें स्थानीय भाषा में डांग कहा जाता है। अजयगढ़, कालिन्जर , चित्रकूट इसी के अन्तर्गत आते थे।

सर जार्ज ग्रियर्सन ने बुन्देली भाषा के आधार पर बुन्देलखण्ड का क्षेत्र निर्धारित किया है। उनके मतानुसार बुन्देलखण्ड उत्तर में चम्बल नदी के उस पार मैनपुरी, आगरा, इटावा के दक्षिणी भाग तक पश्चिम में पूर्वी ग्वालियर तक, दक्षिण में सागर दमोह तक ही नहीं, भोपाल का पूर्वी भाग, नर्मदा के दक्षिण में नरसिन्हपुर, होशन्गाबाद, सिवनी, बालाघाट, छिन्दबाडा के कुछ क्षेत्रों तक फैला है। पूर्व में बान्दा की भाषा बुन्देली नहीं है। श्री कृष्ण गुप्त ने इसका समर्थन किया है। **14, 15**

यमुना के दक्षिण से नर्मदा तक विस्तृत तथा विन्ध्यपर्वत मालाओं की गोद में स्थित बुन्देलखण्ड, देश के मध्यभाग में होने के कारण, भारत का हृदयस्थल कहा जाता है। प्राचीनकाल में पुलिन्द देश, चेदि, दशार्ण, जिजौति, जैजाकभुक्ति, चिचिन्टो, मध्यदेश, युद्धदेश तथा बुन्देलखण्ड आदि नामों से विख्यात इस क्षेत्र को अब उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग ने नया नाम इन्द्रदेश देकर अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित करने की व्यापक योजना बनाई है।

सभी प्रकार के रत्नों, वनसम्पदा, पुरातत्व, साहित्य सन्स्कृति और शौर्य से समृद्ध यह भूमि अपनी विशिष्ट भौगोलिक स्थिति के कारण सभी कालखण्डों में देश के शासकों के लिये आकर्षण का केन्द्र रही है। कुछ विद्वानों ने शौरसैनी प्राकृत के महत्वपूर्ण काव्यग्रंथ तिलोयपण्णत्ती (रचनाकाल पांचवी–छठी सदी) में वर्णित विजयार्ध–प्रदेश इसी क्षेत्र को माना है। उक्त ग्रंथ में विजयार्ध भूमि को उत्तम रत्नों मैं पद्मराग मणियों से समृद्ध बताया गया है। उसमें वज्रार्गल, बज्राढ्य, बज्राभ, सूर्याभ, चूडामणि, बज्रार्द्धतर, रत्नाकर, रत्नपुर जैसे मणिनामान्त या रत्नमणि नाम वाले अनेक नगर हैं। इससे उस भूमि के रत्नगर्भा होने के सन्केत मिलते हैं। बुन्देलखण्ड में आज भी अनेक प्रकार के रत्न एवम् खनिज सम्पदा प्रचुर मात्रा में है। कुछ इतिहासकारों के अनुसार विन्ध्याचल भारत की रीढ़ (पंजाबी में– लक्क) है। कुछ इतिहासकारों के अनुसार रावण की लंका कहीं विन्ध्यशिखर पर थी। स्वर्णमयी लन्का को मणिरत्नों से समृद्ध बताया गया है। तिलोयपण्णत्ती के सापेक्ष लन्का की भौगोलिक स्थिति का पुनः अध्ययन अपेक्षित है।

बुन्देलखण्ड की सीमाओं के बारे में यह लोकोक्ति प्रायः उद्धृत की जाती है–

> इत यमुना, उत नर्मदा, इत चम्बल, उत टौन्स।
> छत्रसाल सों लरन की, रही न काहू हौस।।

किन्तु यह बुन्देलखण्ड की सही सीमा नहीं है। यह बुन्देलखण्ड राज्य के विस्तारक महाराजा छत्रसाल के शौर्य की सीमा है। इसके अन्तर्गत किसी को भी छत्रसाल से लड़ने का हौसला नहीं था।

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

बुन्देलखण्ड की सीमाओं के निर्धारण में विद्वानों में मत भिन्नता है। कुछ विद्वान भौगोलिक आधार पर इसका सीमान्कन करते हैं तो कुछ ऐतिहासिक आधार पर। आबादी के आधार पर इसका निर्धारण करते हैं तो कछ सान्स्कृतिक एकरूपता के आधार पर।

उत्तरप्रदेश शासन द्वारा बुन्देलखण्ड विकास निधि के प्रयोजन से सात जिले झांसी, ललितपुर, जालौन, हमीरपुर, महोबा, बान्दा तथा चित्रकूट इसमें सम्मिलित किये गये हैं। मध्यप्रदेश शासन ने बुन्देलखण्ड विकास प्राधिकरण के लिये पन्ना, छतरपुर, टीकमगढ़, दतिया, सागर तथा दमोह को बुन्देलखण्ड माना है। भारत सरकार के झांसी स्थित भारतीय चारागाह शोध सन्स्थान ने अपने विभिन्न सर्वेक्षणों के प्रयोजन हेतु इन तेरह जिलों के साथ भिण्ड जिले की लहार तथा ग्वालियर जिले की भाण्डेर तहरील से समन्वित क्षेत्र को एक भौगोलिक इकाई मानकर बुन्देलखण्ड का एटलस तैयार किया था। ~~अब भाण्डेर दतिया जिले में सम्मिलित कर दिया गया है।~~

1 akt bund banda gazetier hindi 1909
2 banda history from nic
3 2015.269019.Hindi-Ke upanyaso me bundelkhand
4 2015.273688.Bundelkhand Ki chitrakala-1-197
5 सान्स्कृतिक बुन्देलखण्ड ayodhya prasad kumud Sanskratik
6 (ऋग्वेद (8—5—37—39) में चेदि के एक शक्तिशाली राजा वसु की दानस्तुति भी मिलती है।
7 banda history from nic
8 1929 Gazetteer of BANDA District (by Bundelkhand News)1929 page 216
9 2886 banda gazeteer XXI 1909 district gazetteers of the united provinces of agra and oudh vol xxi page 209
10 2886 banda gazeteer XXI 1909
11 2015.269019.Hindi-Ke upanyaso me bundelkhand
12 बुन्देलखण्ड का साहित्यिक ऐतिहासिक सान्स्कृतिक वैभव —डा0 रमेश चन्द्र श्रीवास्तव (पृ0स0—2)
13 बुन्देलखण्ड की प्राचीनता — डा0 बगीश शास्त्री (पृ0 स0—9)
14 सान्स्कृतिक बुन्देलखण्ड ayodhya prasad kumud Sanskratik
15 बुन्देलखण्ड की ऐतिहासिक—सान्स्कृतिक पृष्ठभूमि